Roll No. ..... Total Pages : 4

MDQ/M-20 **7676**

सूरदास

Paper–X (HI-121)
Opt. (iii)

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 80

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) ये दिन रूसिबे के नाहीं।

कारौ घटा पौन झकझोरै, लता तरुन लपटाहीं।
दादुर मोर चकोर मधुप पिक, बोलत अमृत बानी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, बैरनि रितु नियरानी।।

(ख) उधौ मन अभिमान बढ़ायौ।

जदुपति जोग जानि जिय साँचौ, नैन अकास चढ़ायौ।
नारिनि पै मौकौं पठवत हैं, कहत सिखावन जोग।
मन ही मन अप करत प्रसंसा, यह मिथ्या सुख-भोग।
आयुस मानि लियौ सिर ऊपर, प्रभु आज्ञा परमान
सूरदास प्रभु गोकुल पठवत, मैं क्यों कहों कि आन।।

(ग) इहिं अन्तर मधुकर इक आयौ।

निज स्वभाव अनुसार निकट ह्वै, सुन्दर शब्द सुनायौ।
पूछन लागीं ताहि गोपिका, कुबिजा तोहिं पठायौ।
कौधों सूर स्याम सुन्दर कौं, हमैं संदेसौं लायौ।।

(घ) निरगुन कौन देस कौ बासी?

मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझतिं सांचि न हाँसी।
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी?
कैसो बरन भेष है कैसौ, किहिं रस मैं अभिलाषी?
पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जो रे करैगी गांसी।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी।।

(ङ) सुदामा सोचत पंथ चले।

कैसें करि मिलिहैं मोहिं श्रीपति, भए तब सगुन भले।
पहुँच्यौ जाइ राजद्वारे पर काहूं नहिं अटकायौ।
इत उत चितै धँस्यौ मंदिर मैं, हरि कौ दरसन पायौ।
मन मैं अति आनंद कियौ हरि, बाल-मीत पहिचान।
धाए मिलन नगन पग आतुर, सुरज प्रभु भगवान।।

(च) तुम्हरे देस कागद मसि खूटी।

भूख प्यास अरु नींद गई सब, बिरह लरौ तन लूटी।
दादुर मोर पपीहा बोले, अवधि भई सब झूठी।
पाछैं आइ तुम कहा करौगे, जब तन जैहै छूटी।
राधा कहति संदेश स्याम सौं, भई प्रीति की टूटी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु, सखी करति हैं कूटी।।

(7×3=21)

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए :

(क) भ्रमरगीत में वाग्वैदग्ध्य को स्पष्ट कीजिए।

(ख) भ्रमरगीत का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

(ग) सूरदास की दृष्टिकूट-पदावली का वर्णन विस्तार रूप से कीजिए।

(घ) सूरदास की गीतिकाव्य की विशेषताएँ लिखें।

(ङ) सूरदास की छंद व अलंकार योजना का स्वरूप स्पष्ट करें।

(च) आधुनिक संदर्भों में सूरकाव्य की प्रासंगिकता का वर्णन करें। (12×3=36)

3. निम्नलिखित लघूत्तरी प्रश्नों में से किन्हीं **पाँच** के उत्तर दीजिए :

(क) भ्रमरगीत की परम्परा।

(ख) सूरदास की भाषा-शैली।

(ग) कृष्ण का शील निरूपण।

(घ) सूर की संगीत साधना।

(ङ) सूरदास का काव्य-रूप।

(च) सूरकाव्य और कविता के आधुनिक प्रतिमान।

(छ) यशोदा का शील निरूपण।

(ज) राधा का शील निरूपण।

(झ) नन्द का शील निरूपण।

(ञ) भ्रमरगीत में सूर का स्थान। (3×5=15)

4. सभी वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) सूरदास के गुरु वल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित मार्ग को क्या कहा जाता है?

(ख) किन दो प्रसंगों में सूरदास ने सायुज्य मुक्ति के महत्त्व को दर्शाया है?

(ग) सूरदास ने पुष्टिमार्ग की तीन आसक्तियों में से कौन-सी आसक्ति को अपनाया है?

(घ) दार्शनिक दृष्टि से सूरदास ने श्रीकृष्ण को किसका प्रतीक माना है?

(ङ) पुष्टिमार्ग के अनुसार सूरदास ने कितनी प्रकार की मुक्तियों का वर्णन किया है?

(च) सूरदास की किस रचना में दृष्टकूट-पदों का संग्रह संकलित है?

(छ) सूरदास को 'पुष्टिमार्ग का जहाज' किसने कहा था?

(ज) 'सूरसागर' के किस प्रसंग में सूरदास के वाग्वैदग्ध्य के दर्शन होते हैं? (1×8=8)